International Journal of Applied Research 2017; 3(7): 21-22

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(7): 21-22
www.allresearchjournal.com
Received: 09-05-2017
Accepted: 10-06-2017

Dr. Anindya
Ex - Ph.D. Research Scholar, Department of History, Gurukula Kangri Vishwavidyalaya, Haridwar, Uttarakhand, India

Correspondence
Dr. Anindya
Ex - Ph.D. Research Scholar, Department of History, Gurukula Kangri Vishwavidyalaya, Haridwar, Uttarakhand, India

इतिहास में साक्ष्य अभाव

Dr. Anindya

प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही भारत का इतिहास एक गौरवशाली इतिहास रहा है परन्तु इस गौरवशाली इतिहास को जानने के लिखित साक्ष्य हमें बहुत कम संख्या में उपलब्ध हैं जिसकी वजह से इतिहास को जानने की सटीक जानकारी का लगातार अभाव बना रहता है और विद्यार्थी भी इतिहास को जानने में अपनी अरुचि दिखाते हैं। हमारे देश में वैसे भी इतिहास के अध्ययन को गड़े मुर्दे उखाड़ने की संज्ञा दे दी जाती है। अतः यह कथन कि ''किसी देश को बिगाड़ना है तो उसके इतिहास को भ्रामक बना दो'' भारत के इतिहास के सन्दर्भ में सही प्रतीत होता है। यह सही भी है क्योंकि भारत के इतिहास का जो अपना स्वाभाविक दोष (साक्ष्यों का उचित मात्रा में न मिलना) है, वह भी अरुचि ही बढ़ाता है। इसलिए जरूरी है कि इतिहास के विद्यार्थी को इतिहास का बोध हो, और इतिहास को जानने में उसका दृष्टिकोण व्यापक हो जिससे वह इतिहास को भली भांति समझ सके और उसकी सही व्याख्या प्रस्तुत कर सके।

विदेशी साहित्यकारों का यह कथन कि भारतीयों में इतिहास–बुद्धि का अभाव था, अतः उन्होंने ऐतिहासिक घटनाओं का लिखित वर्णन नहीं किया, सत्य प्रतीत होता है। मुस्लिम लेखक अल्बेरूनी ने भी अनुभव किया कि ''भारतीयों की ज्ञान विषयक तथा वैज्ञानिक चेतना को क्षति पहुँची है क्योंकि उन्होंने धर्म में बताई गयी बातों को शत–प्रतिशत स्वीकार कर लिया।''[1] वे मानते हैं कि ''हिन्दू लोग घटनाओं के ऐतिहासिक क्रम की ओर बहुत अधिक ध्यान नहीं देते। घटनाओं के तिथिक्रमानुसार वर्णन करने में वे बड़ी लापरवाही बरतते हैं।''[2] वह ''उन लोगों की हंसी उड़ाते हैं जिन्हें वे अज्ञानियों की कोटि में रखते हैं, अर्थात् ऐसे लोग जिनकी इतिहास, भूगोल तथा विज्ञान–सम्बन्धी धारणाएँ उपहासास्पद है।''[3] इसी क्रम को आगे बढ़ाया जाए तो इतिहासकार बी0एल0 शर्मा ने अपनी पुस्तक 'भारतीय संस्कृति का विकास' में लिखा है कि ''भारत का इतिहास सम्पूर्ण भारत का राष्ट्रीय इतिहास न कहलाकर जातीय व प्रान्तीय इतिहास की कहलायेगा।''[4]

यदि इतिहासकारों की उपरोक्त टिप्पणियों पर सत्यता से विचार किया जाए तो ये कथन सही साबित होते हैं। परन्तु हिन्दू इतिहासकार सभी बातों का यह कहकर खंडन कर देते हैं कि ''वास्तविकता तो यह है, प्राचीन भारतीयों ने इतिहास कि को उस दृष्टि से नहीं देखा जिससे आज के विद्वान देखते हैं। उनका दृष्टिकोण पूर्णतया धर्मपरक था। उनकी दृष्टि में इतिहास साम्राज्यों अथवा सम्राटों के उत्थान अथवा पतन की गाथा न होकर उन समस्त मूल्यों का संकलन–मात्र था जिनके ऊपर मानव–जीवन आधारित था। अतः उनकी बुद्धि धार्मिक और दार्शनिक ग्रन्थों की रचना में ही अधिक लगी न कि राजनैतिक घटनाओं के अंकन में।''[5] अब उपरोक्त सफाई पेश कर देने से हिन्दू इतिहासकार बच नहीं सकते, क्योंकि इतिहास के अध्ययन में जितनी मुश्किल एक इतिहास के विद्यार्थी को होती है उतनी मुश्किल शायद ही किसी और विषय के छात्रों को होती हो। इतिहास विषय की छात्रा होने के नाते मुझे यह भली भांति पता है कि भारत के इतिहास के अध्ययन में अनेक दुविधाएँ सामने खड़ी हो जाती हैं। इतिहासकार विन्सेन्ट आर्थर स्मिथ ने भारतीय इतिहास की व्याख्या करने में दो शब्दों का मुख्यतः प्रयोग किया है–

1. एन्टोक्रेसी
2. डिस्पोटिज्म।

इसके आधार पर वे मानते हैं कि ''भारत ने प्रगति नहीं की; क्योंकि उनकी सामाजिक राजनीतिक रचनाओं में तंत्र और अनियंत्रित सामाजिक व्यवस्था थी।''[6] सही मायनों में हमें विदेशी इतिहासकारों का आभारी होना चाहिए क्योंकि उन्होंने भारतीय इतिहास की व्याख्या करने में निष्पक्षता की नीति का अवलोकन किया और भारत के इतिहास को खोजने में सहायक बने। उनके निष्पक्ष वृतांतों के फलस्वरूप हमें इतिहास की कुछ सटीक जानकारियाँ उपलब्ध होती हैं।

डॉ0 परमानन्द सिंह ने अपनी पुस्तक 'इतिहास दर्शन' में लिखा है–

''प्राचीन इतिहासकारों ने घटनाओं के वर्णन में आध्यात्मिक शक्ति, धर्म, कर्म, मोक्ष, सत्य तथ्यों आदि को मिश्रित रूप में लिखा था और तिथिक्रम पर बहुत कम ध्यान दिया था।''[7] इतिहासकार रमेशचन्द्र मजूमदार भी इतिहास लेखन में पौराणिक तिथिक्रम को अस्वीकार करते हैं। उनके अनुसार, ''पौराणिक तिथिक्रम ने ही वास्तविक इतिहास को दिग्भ्रमित किया है।''[8] इसके अतिरिक्त मजूमदार ने माना है कि ''इतिहास का सम्बन्ध आन्तरिक सत्य के प्रति जिज्ञासा है। सत्य का अन्वेषण ही इतिहास है।''[9]

भारत के इतिहास के संदर्भ में प्राचीन इतिहासकारों की लेखन पद्धति के चलते ही कुछ भी स्पष्ट नजर नहीं आता। अनेक ऐतिहासिक घटनाओं में अनुमान ही लगाए जाते हैं कि ऐसा हुआ होगा या ऐसा नहीं हुआ होगा। भारत का इतिहास ऐसा हुआ होगा या ऐसा नहीं हुआ होगा, तक ही सिमट कर रह जाता है। प्रमाणों व साक्ष्यों के अभाव में भारत का इतिहास, इतिहास न रहकर एक दुविधा बन गया है। साक्ष्यों के अभाव के कारण भारत के इतिहास के अनेक ऐसे मुद्दे हैं जो स्पष्टता से बहुत परे हैं, और मुझे यह कहने में जरा भी संकोच नहीं है कि ये अस्पष्ट घटनाएँ हिन्दू इतिहासकारों के रचे साहित्य की मेहरबानी की वजह से ही हैं।

इतिहासकार बी0एल0 शर्मा ने अपनी पुस्तक 'भारतीय संस्कृति का विकास' में लिखा है कि ''इस देश पर जब कभी आक्रमण हुआ वह आर्थिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही हुआ है।''[10] माना कि आक्रमण आर्थिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए होते थे परन्तु यह आर्थिक उद्देश्य की पूर्ति आर्थिक क्षेत्र तक ही सीमित रहनी चाहिए थी, यह आर्थिक उद्देश्य से राजनैतिक और धार्मिक उद्देश्य में परिवर्तित क्यों हो जाती थी? मेरे विचार में, देश में विदेशी आक्रमणकारियों का आना हमारे प्राचीन इतिहासकारों की ही देन थी। वे अपने असमानता पर आधारित लेखन से देश को लगातार कमजोर बनाने में लगे हुए थे। उन्होंने अपने लेखन में अराजक तत्वों को प्रमुखता दी। उन्हें इस बात का आभास नहीं था कि देश में असमानता और अराजकता फैलाने से राष्ट्र कमजोर होता है, जिसके परिणामस्वरूप वहाँ कोई विदेशी ही अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है, उसके लिए उस कमजोर राष्ट्र के सभी वर्ग समान होते हैं, और उन सभी पर उसे शासन करना होता है। यह सर्वविदित है कि प्राचीन काल से ही हिन्दू धर्म में अनेक बुराइयाँ विद्यमान थीं, अतः हिन्दू धर्म की इन्हीं बुराइयों के फलस्वरूप विदेशियों के आर्थिक उद्देश्य राजनैतिक और धार्मिक उद्देश्यों में परिवर्तित होते जाते थे।

हम प्राचीन भारतीय इतिहासकारों से यह अपेक्षा कैसे कर सकते हैं कि वे विदेशों में जाते और उनके राष्ट्रों का इतिहास भी लिखते? इनसे तो अपने राष्ट्र का ही विस्तृत इतिहास नहीं लिखा गया और जो कुछ लिखा भी तो धर्म आधारित ही लिखा। जिस इतिहास लेखन में शासन व्यवस्था, राजनीतिक स्थिति, आर्थिक ढांचे का जिक्र नहीं तो उस लेखन में धर्म का क्या मतलब रह जाता है? कोई भी राष्ट्र केवल धार्मिक ढांचे से ही नहीं चलता। एक राष्ट्र को मजबूत बनाने के लिए शासन के अन्य पहलुओं को भी मजबूत बनाना पड़ता है। और वैसे भी प्राचीन भारतीय साहित्यकारों ने धार्मिक क्षेत्र के बारे में भी लिखा तो उसमें भी इतनी ज्यादा जटिलता भर दी कि वह सामान्य जन की समझ के बहुत परे थी। विदेशी इतिहासकार यह मानते हैं कि ''हिन्दू धर्म में यह निर्धारित करना कठिन है कि इनका सर्वप्रधान देवता कौन है। हिन्दुओं ने जिस समय जिस देवता की प्रार्थना की उसे ही सर्वोच्च मानकर उसमें ही सम्पूर्ण गुणों का आरोपण कर दिया, मैक्समूलर ने इस प्रवृत्ति को हैनोथीज्म कहा है।''[11] धर्म में व्याप्त इन जटिलताओं के कारण धर्म के ओर–छोर का भी पता नहीं चलता जिसकी वजह से हिन्दू धर्म में अनेक बुराइयाँ और क्रूरताएँ फैल गई। सामान्य जन का हिन्दू धर्म से विश्वास ही उठ गया। परिणामतः वे दूसरी राह चल दिए जहाँ उन्हें वास्तविकता और सत्यता का बोध होना था। माना जाए तो मानव जाति की यह खोज एक स्वाभाविक खोज ही थी।

लोएस डिकिंसन ने तो यह बात स्पष्टतः प्रसारित की थी कि ''हिन्दू इतिहासकार नहीं थे।''[12] अब आगे यह कह देना कि भारत में यूनान तथा रोम के हेरोडोटस, थ्यूसीडाइडीज तथा लिवी जैसे इतिहासकार या दार्शनिक नहीं हुए, सही लगता है, क्योंकि लेखन कार्य तो भारत में भी हुआ था परन्तु यह लेखन सिर्फ पक्षपातपूर्ण लेखन ही रहा। भारत के इतिहासकार सिर्फ असमानता पर आधारित इतिहास ही लिखने में लगे रहे। ऊपर के शब्दों से यह विदित है कि भारत के इतिहास लेखन में अनेक कमियाँ दृष्टिगोचर हैं, अतः निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि यदि हमारे प्राचीन इतिहासकार पक्षपात का साहित्य न रच कर देश के विकास का इतिहास रचते तो इतिहासकारों में उनका नाम सम्मान के साथ लिया जाता। इतिहास को समझने तथा उसके पुनर्निर्माण में आसानी होती। सटीक जानकारी तथा स्पष्टता के अभाव में वर्तमान समय में इतिहास का अध्ययन करना एक जटिल समस्या बन गया है। अतः भारत के इतिहास के पुनर्निर्माण की सतत आवश्यकता है जो गहन अध्ययन, वैचारिकता तथा निष्पक्ष चिंतन से ही संभव होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मध्यकालीन भारत, भाग 1, संपादक, हरिश्चन्द्र वर्मा, प्रकाशक, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, बैरक नं0 2 एवं 4, केवेलरी लाइन, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली–110007, पृ0 500
2. प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, लेखक के0सी0 श्रीवास्तव, यूनाइटेड बुक डिपो, 21 यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद, ग्यारहवां संस्करण, पृ0 5
3. मध्यकालीन भारत, भाग 1, संपादक, हरिश्चन्द्र वर्मा, प्रकाशक, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, बैरक नं0 2 एवं 4, केवेलरी लाइन, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली–110007, पृ0 500
4. भारत संस्कृति का विकास, लेखक बी0एल0 शर्मा, लक्ष्मी प्रकाशन मन्दिर, खुरजा, उत्तर प्रदेश, प्रथम संस्करण, पृ0 5
5. प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, लेखक के0सी0 श्रीवास्तव, यूनाइटेड बुक डिपो, 21 यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद, ग्यारहवां संस्करण, पृ0 5
6. इतिहास दर्शन, लेखक डॉ0 परमानन्द सिंह, नरेन्द्र प्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली–110007 पृ0 159
7. वही, पृ0 85
8. आर0सी0 मजूमदार, हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ इण्डियन पीपुल, पृ0 26
9. आर0सी0 मजूमदार, इण्डियन हिस्टोरियोग्राफी–सम रीसेन्ट ट्रेण्ड्स एस0पी0 सेनः हिस्टोरियन्स एण्ड हिस्टोरियोग्राफी इन मार्डन इण्डिया, पृ0 23
10. भारतीय, संस्कृति का विकास, लेखक बी0एल0 शर्मा, लक्ष्मी प्रकाशन मन्दिर, खुरजा, उत्तर प्रदेश, प्रथम संस्करण, पृ0 5
11. प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, लेखक के0सी0 श्रीवास्तव, यूनाइटेड बुक डिपो, 21 यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद, ग्यारहवां संस्करण, पृ0 92
12. इतिहास दर्शन, लेखक डॉ0 परमानन्द सिंह, नरेन्द्र प्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली–110007 पृ0 3